चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग-बोध

CHITRA MUDGAL KE KATHA SAHITYA MEIN

YUGA-BODH

Thesis submitted to the
MAHATMA GANDHI UNIVERSITY
Kottayam, Kerala

for the Award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

By

PRAVITHALAKSHMI K

Supervised by

Dr. JAMES GEORGE
Associate Professor & HOD (Retd.)
P.G. & Research Department of Hindi
NIRMALA COLLEGE, MUVATTUPUZHA - 686 661

P.G. & RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI
NIRMALA COLLEGE, MUVATTUPUZHA
NOVEMBER 2017

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग-बोध

T0050

महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम

केरल की पीएच.डी की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध

प्रस्तुतकर्ता

प्रवितालक्ष्मी के

निर्देशक

डॉ.जेम्स जोर्ज

हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग

निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा

8H3.09 PRA-C

T0050

हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग

निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा

नवंबर 2017

ANTI - PLAGIARISM CERTIFICATE

This is to certify that the PhD Thesis entitled '**CHITRA MUDGAL KE KATHA SAHITYA MEIN YUGA-BODH**' is a genuine and bonafide research work carried out by **Smt. Pravithalakshmi K** under my supervision and guidance to be submitted for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the Mahatma Gandhi University, Kottayam.

In this thesis Plagiarism has been checked and found that it is below 20% as per the university agreed norms and conditions.

Muvattupuzha
28/11/2017

Dr. JAMES GEORGE
Supervising Teacher
Associate Professor & HOD (Retd.)
P.G. & Research Department of Hindi
Nirmala College, Muvattupuzha

Dr. JAMES GEORGE
M.A. Ph.D Hindi, M.A. English, M.A. Politics
Associate Professor & H.O.D (Retd)
P.G & Research Dept. Of Hindi
Nirmala College Muvattupuzha

DECLARATION

I, **Pravithalakshmi K** do hereby declare that the study of the thesis titled **CHITRA MUDGAL KE KATHA SAHITYA MEIN YUGA-BODH'** has been undertaken by me under the guidance of Dr. James George, Associate Professor & Head of the Department (Retd.) P.G. & Research Department of Hindi, Nirmala College, Muvattupuzha. This work has not been submitted by me or any one else for the award of a degree, diploma, title or any recognition before.

Muvattupuzha
28/11/2017

PRAVITHALAKSHMI K

पुरोवाक्

साहित्यकार समाज की ज्वलन्त समस्याओं, परिवर्तनशील तत्वों एवं मानव की मानसिक विशेषताओं को स्पष्ट रूप से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते रहते हैं। आधुनिक युग में तो साहित्यकार सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करके मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं। अतः साहित्यकार युग-बोध के संवाहक होते हैं। प्रत्येक युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के दायरे में रहकर मानव चेतना और अनुभूतियों की व्याख्या करना उनका उद्देश्य है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में तो महिला लेख़न की एक सशक्त परंपरा जारी है, जिसमें चित्रा मुद्‌गल का प्रमुख स्थान है। चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में प्रस्तुत युग-बोध का अध्ययन करना इस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है। इस के लिए मैंने चित्रा जी के चार उपन्यासों और कहानी संकलनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

मेरे शोध प्रबन्ध का शीर्षक है-**चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में युग-बोध**। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे छह अध्यायों में बाँटकर अध्ययन किया गया है।

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में युग-बोध

2. चित्रा मुद्‌गलः वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन की झलक

3. युग-बोध का चित्रणः चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में, विशेषकर उपन्यासों में

4. युग-बोध के बदलते आयामः चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में, विशेषकर कहानियों में

5. चित्रा मुद्‌गल के भाषा-तंत्र

6. उपसंहार

पहले अध्याय का शीर्षक है-**स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में युग-बोध**। इस अध्याय में युग-बोध का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और विविध आयामों को चित्रित करते हुए स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में आए युगीन परिवेश के अन्तर्गत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश को चित्रित करने का प्रयास किया गया है।

दूसरा अध्याय-**चित्रा मुद्गलः वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन की झलक** में चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

तीसरा अध्याय-**युग-बोध का चित्रणः चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में-विशेषकर उपन्यासों में** है। इसमें चित्रा मुद्गल द्वारा अपने उपन्यासों में उठाए गए युगीन परिवेशों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

चौथा अध्याय है-**युग-बोध के बदलते आयामः चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में-विशेषकर कहानियों में**। इसमें लेखिका द्वारा प्रत्येक कहानी में उठाए गए युग-बोध को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक धरातल पर विश्लेषण करके अध्ययन किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय है, **चित्रा मुद्गल के भाषा-तंत्र**। इसमें चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में प्रयुक्त भाषा के भाषा पक्ष और शैली पक्ष की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

छठा अध्याय **उपसंहार** है। इसमें चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा निकले निष्कर्ष को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. सी. विश्वनाथन जी के निर्देशन में आरंभ हुआ था। लेकिन सबसे दुख की बात यह है कि इस शोध कार्य की समाप्ति के पहले ही मेरे गुरु डॉ. सी. विश्वनाथन जी का आकस्मिक निधन हो

गया। आज जब यह शोध कार्य शोध प्रबंध के रूप में पूर्णता प्रप्त की गयी है तो प्रसन्नता के नीचे दुःख की एक अंतरधारा बहती हुई महसूस हो रही है कि इस अवसर पर मेरे आदरणीय गुरू विश्वनाथन जी मेरे साथ नहीं है। शोध समर्पण के इस अवसर पर मैं सर्वप्रथम स्वर्गीय विश्वनाथन जी की स्मृति के समक्ष नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूँ।

डॉ. सी.विश्वनाथन जी के निधन के उपरान्त मेरे निवेदन को स्वीकार करते हुए इस शोध प्रबंध के निर्देशन का भार निर्मला कॉलेज मुवाटुपुषा के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. जेम्स जोर्ज जी ने अपने ऊपर लेकर मुझ पर बडी कृपा की। मेरे इस गुरू के स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन, कुशल निर्देश और मार्ग दर्शन के कारण ही यह शोध प्रबंध बिना विलम्ब के पूर्ण रूप ग्रहण कर लिया। आदरणीय जेम्स जोर्ज जी का अस्सीम स्नेह, प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए तहे दिल से मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य की सफलता के लिए कई संस्थाओं और व्यक्तियों से मुझे सहायता प्राप्त हुई है। मेरा शोध केन्द्र निर्मला कॉलेज मुवाट्टुपुषा के प्राचार्य डॉ. टी.एम. जोसेफ, वहाँ के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा आदरणीय डॉ. सुजा सी., अन्य आदरणीय अध्यापक और पुस्तकालय के कर्मचारियों ने भी मेरे शोधकार्य को सफल बनाने में मूल्यवान सुझाव एवं निर्देश दिये हैं। उनकी मदद के लिए मैं सदैव उनके प्रति आभारी हूँ।

महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, कोच्चिन विश्व विद्यालय और श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के अध्यापकों और पुस्तकालय के कर्मचारियों ने भी इस शोध कार्य को सुगम बनाने के लिए काफी सहयोग दिये हैं, उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इसके अलावा सामयिक प्रकाशन, वाणी प्रकाशन, विद्या प्रकाशन और अन्नपूर्णा प्रकाशन ने मेरे शोध प्रबन्ध के लिए उपयुक्त मूल सामग्री प्रदान करके सहायता की है। उनके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

श्री नारायणा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी.वी. सुराज बाबू और अन्य प्रिय मित्रों में उमा और

सुजिता ने इस शोध कार्य को सफल बनाने में मुझे बहुत सहायता प्रदान की थी, उन सब के प्रति मैं तहे दिल से अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध के हर एक शब्द में मेरे साथ गुज़रकर इसके मुद्रण सुचारू रूप से ठीक समय पर करके मेरे मित्र अजल पी. ने इसे गतिशील बनाया। इसके लिए मैं सदैव उनके प्रति आभारी रहूँगी।

मेरे पिताजी ए.एन. केशवन नायर, माताजी एन. वत्सला, सास-ससुर और मेरे समस्त गुरुजनों के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके आशीर्वाद ने आखिर मुझे इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए काबिल बनाया। इसके साथ-साथ मेरे परिवार वालों में प्रिया, प्रजेष, इन्दुलेखा, श्रीलक्ष्मी, लक्ष्मी पार्वती और अन्य बन्धुजनों और प्रिय मित्रों को आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे इस शोध कार्य के लिए सहायता पहूँचायी।

मेरे व्यक्तित्व के आधार बने जीवन साथी अनूप सदाशिवन, बच्चे रविशंकर और मीनाक्षी को आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है, क्योंकि उन्होंने सब कुछ सहकर इस शोध प्रबन्ध को लक्ष्य प्राप्ति तक पहूँचाने के लिए मुझे पूर्ण मन से सहयोग प्रदान किया है। मैं उन सबको तहे दिल से अपनी कृतज्ञता अदा करती हूँ।

मैं हर एक शुभ चिन्तकों एवं मददगारों को आभार प्रकट करते हुए, सर्वोपरि विधाता को प्रणाम करते हुए अपना शोध प्रबन्ध विद्वानों के समक्ष सविनय प्रस्तुत करती हूँ।

हिन्दी विभाग

निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा

2017 **प्रवितालक्ष्मी के.**